

टकराव टालिए !

जिस तरह हम रास्ते पर सँभलकर चलते हैं, फिर सामनेवाला आदमी कितना भी बुरा हो और वह हम से टकराये और हमारा नुकसान करे, वह अलग बात है। लेकिन हमारा इरादा नुकसान पहुँचाने का नहीं होना चाहिए। अगर हम उसे नुकसान पहुँचाने जायें तो उसमें हमारा भी नुकसान होनेवाला है। अर्थात् प्रत्येक टकराव में सदैव दोनों को ही नुकसान होता है। आप सामनेवाले को दुःख पहुँचायें उसी के साथ आपको भी, ओन द मूमेन्ट (उसी क्षण) दुःख पहुँचे बिना नहीं रहेगा। यही टकराव है।

इसलिए मैंने उदाहरण दिया है कि रोड पर ट्रैफिक का धर्म क्या है कि टकराओगे तो मर जाओगे। टकराने में जोखिम है, इसलिए किसी के साथ मत टकराना। इसी प्रकार व्यवहारिक कार्यों में भी मत टकराना। टकराव टालिए !

- दादाश्री

दादा भगवान प्ररूपित

टकराव टालिए



दादा भगवान कथित

टकराव टालिए

संकलना : डॉ. नीरुबहन अमीन

प्रकाशक : दादा भगवान इंटरनेशन वती
श्री अजित सी. पटेल
'दादा दर्शन' प, ममतापार्क सोसायटी,
नवगुजरात कोलेजनी पाछण,
उस्मानपुरा, अमदावाढ-३८००१४.
फोन - (०७८) ७५४०४०८, ७५४३८७८
E-Mail : dadaniru@vsnl.com

© : संपादकने स्वाधीन

दस आवृतिओ : ७५,०००, जान्युआरी, २००१ सुधी
अगियारमी आवृति : १०,०००, नवेम्बर, २००१

भाव मूल्य : 'परम विनय'
अने
'हुं कंई ज जाइतो नथी', अे भाव !

द्रव्य मूल्य : २.५० रुपिया (राहत दरे)

लेसर कंपोज : दादा भगवान इंटरनेशन, अमदावाढ.

मुद्रक : महाविदेह इंटरनेशन (प्रिन्टींग डीवीजन),
भोंयराभां, पार्श्वनाथ येम्भर्स, रिजर्व बैंक पासे,
ईन्कमटेक्स, अमदावाढ. फोन : ७५४२८६४

દાદા ભગવાન ફાઉન્ડેશનના પ્રકાશનો

- | | |
|--|---|
| <p>૧. ભોગવે તેની ભૂલ (ગુ., અં., હિ.)</p> <p>૨. બન્યું તે ન્યાય (ગુ., અં., હિ.)</p> <p>૩. એડજસ્ટ એવરીથિંગ (ગુ., અં., હિ.)</p> <p>૪. અથડામણ ટાળો (ગુ., અં., હિ.)</p> <p>૫. ચિંતા (ગુ., અં.)</p> <p>૬. ક્રોધ (ગુ., અં.)</p> <p>૭. માનવધર્મ</p> <p>૮. સેવા-પરોપકાર</p> <p>૯. હું કોણ છું ?</p> <p>૧૦. ત્રિમંત્ર</p> <p>૧૧. દાન</p> <p>૧૨. મૃત્યુ સમયે, પહેલાં અને પછી</p> <p>૧૩. ભાવના સુધારે ભવોભવ (ગુ., અં.)</p> <p>૧૪. વર્તમાન તીર્થંકર શ્રી સીમંધર સ્વામી
(ગુજરાતી, હિન્દી)</p> <p>૧૫. પૈસાનો વ્યવહાર (ગ્રં., સં.)</p> <p>૧૬. પતિ-પત્નીનો દિવ્ય વ્યવહાર (ગ્રં., સં.)</p> <p>૧૭. મા-બાપ ધોક્કરોનો વ્યવહાર (ગ્રં., સં.)</p> <p>૧૮. પ્રતિક્રમણ (ગ્રંથ, સંક્ષિપ્ત)
(ગુ.=ગુજરાતી, હિ.=હિન્દી, અં.=અંગ્રેજી, ગ્રં.=ગ્રંથ, સં.=સંક્ષિપ્ત)</p> | <p>૧૯. સમજથી પ્રાપ્ત બ્રહ્મચર્ય (ગ્રં., સં.)</p> <p>૨૦. વાણીનો સિદ્ધાંત (ગ્રં., સં.)</p> <p>૨૧. કર્મનું વિજ્ઞાન</p> <p>૨૨. પાપ-પુણ્ય</p> <p>૨૩. સત્ય-અસત્યના રહસ્યો</p> <p>૨૪. અહિંસા</p> <p>૨૫. પ્રેમ</p> <p>૨૬. ચમત્કાર</p> <p>૨૭. વાણી, વ્યવહારમાં...</p> <p>૨૮. નિજદોષ દર્શનથી, નિર્દોષ</p> <p>૨૯. ગુરુ-શિષ્ય</p> <p>૩૦. આપ્તવાણી - ૧ થી ૧૨</p> <p>૩૧. આપ્તસૂત્ર - ૧ થી ૫</p> <p>૩૨. Harmony in Marriage</p> <p>૩૩. Generation Gap</p> <p>૩૪. Who am I ?</p> <p>૩૫. Ultimate Knowledge</p> <p>૩૬. દાદા ભગવાન કા આત્મવિજ્ઞાન</p> <p>૩૭. 'દાદાવાણી' મેગેઝીન-૬૨ મહિને...</p> |
|--|---|

ત્રિમંત્ર

दादा भगवान कौन ?

जून उन्नीस सौ अट्ठावन की वह साँझका करीब छह बजेका समय, भीड़से धमधमाता सूरतका स्टेशन. प्लेटफार्म नं. ३ परकी रेलवे की बेंच पर बैठे अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी मंदिर में कुदरत के क्रमानुसार अक्रम रूपमें कई जन्मोंसे व्यक्त होने के लिए आतुर “दादा भगवान” पूर्णरूपसे प्रकट हुए ! और कुदरतने प्रस्तुत किया अध्यात्मका अद्भूत आश्चर्य ! एक घण्टें में विश्व दर्शन प्राप्त हुआ । “हम कौन ? भगवान कौन ? जगत् कौन चलाता है ? कर्म क्या ? मुक्ति क्या ? इत्यादी.” जगत के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों का संपूर्ण रहस्य प्रकट हुआ । इस तरह कुदरतने विश्वमें चरनोंमें एक अजोड पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, चरुतर के भादरण गाँवके पाटीदार कोन्ट्रेक्टका व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष !

उन्हें प्राप्ति हुई उसी प्रकार केवल दो ही घण्टों में अन्यों को भीवे प्राप्ति करते थे, अपने अद्भूत सिद्ध हुए ज्ञान प्रयोग से । उसे अक्रममार्ग कहा । अक्रम अर्थात् बिना क्रमके और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी क्रमानुसार उपर चढ़ना । अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग ! शॉर्टकट !

आपश्री स्वर्ग प्रत्येक को “दादा भगवान कौन ।” का रहस्य बताते हुए कहते थे कि “यह दिखाई देते हैं वे “दादा भगवान ” नहीं हो सकते । यह दिखाई देनेवाले हैं वे तो “ए. एम. पटेल” हैं । हम ज्ञानी पुरुष हैं । और भीतर प्रकट हुए हैं वे “दादा भगवान” है । दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ है, वे आपमें भी है । सभीमें भी है । आप में अव्यक्त रूपमें रहते हैं अऔ “यहाँ संपूर्ण रूपसे व्यक्त हुए हैं । मैं खुद भगवान नहीं हूँ । मेरे भीतर प्रकट हुए दादा भगवानको मैं भी नमस्कार करता हूँ ।”

“व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं होना चाहिए ।” इस सिद्धांतसे वे सारा जीवन जी गये । जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया । उल्टें धंधेकी अतिरिक्त कमाई से भक्तों को यात्रा कखाते थे !

परम पूजनीय दादाश्री गाँव गाँव देश-विदेश परिभ्रमण करके मोक्षार्थी जीवों को सत्संग और स्वरूप ज्ञानकी प्राप्ति करवाते थे । आपश्रीने अपनी हयात में ही पूजनीय डॉ. नीरूबहन अमीनको स्वरूपज्ञान प्राप्ति करवाने की ज्ञान सिद्धि अर्पित की है । दादाश्री के देह विलय पश्चात आज भी पूजनीय डॉ. नीरूबहन अमीन गाँव-गाँव, देश-विदेश जाकर मोक्षार्थी जीवोंको सत्संग और स्वरूपज्ञानकी प्राप्ति निमित्त भावसे करा रही है । जिसका लाभ हजारो मोक्षार्थी लेकर धन्यताका अनुभव करते हैं ।

संपादकीय

लाखों लोग बट्टी-केदारकी यात्राको गये और यकायक(एकाएक) बर्फ गिरी और सैकड़ों लोग दबकर मर गये । यह सुनकर प्रत्येक कें भीतर हाहाकार मच जायेगा कि कितने भक्ति भावसे भगवान के दर्शन को जाते हैं, उनको ही भगवान ऐसे मार डाले ? भगवान भयंकर अन्यायी है । दो भाईयों के बीच जायदाद के बँटवारे में एक भाई सब हडप लेता है । दूसरे को कम मिलता है वहाँ बुद्धि न्याय खोजती है. अंत में कोर्ट कचहरी चढ़ते हैं और सुप्रीम-कोर्ट (सुप्रीम कोर्ट) तक लड़ते हैं । फल स्वरूप दुःखी ज्यादा दुःखी होते रहेते हैं । निर्दोष व्यक्ति जेल जाता है, गन्धगार (गुनहगार) मौज उडाता है, तब इसमें क्या न्याय रह गया ? नीतिमान मनुष्य दुःखी होवे, अनीतिमान बंगले बनाये और गाडियों में फिरे. वहाँ किस प्रकार न्याय स्वरूप लगेगा ?

कदम-कदम पर ऐसे अवसर आते हैं, जहाँ बुद्धि न्याय खोजने बैठ जाती है और दुःखी ज्यादा दुःखी हो जाते हैं । परम पूजनीय दादाश्री की अद्भूत आध्यात्मिक खोज है कि संसार में कहीं भी अन्याय होता ही नहीं है । हुसा सो ही न्याय (जोहुसा, वही न्याय) । कुदरत कभी भी न्याय के बाहर गई नहीं । क्योंकि कुदरत कोई व्यक्ति या भगवान नहीं है कि किसीका उस पर जोर चले ? कुदरत यानी सायन्टिफिक सरमकस्टेन्शियल एविडन्सिस । कितने सारे संयोग इकट्ठे ह तभी एक कार्य होता है । इतने सारे थे उनमें से अमुक ही क्यों मारे गये ? जिस-जिस का हिसाब था वे ही शिकार हुए, मृत्यु के ओर दुर्धटना के । एन इन्सिडेन्ट-हेस सो मैनी हेड कोझीझ(काँझेझ) और एन एकिसडेन्ट हेस (हँज) टु मेनी काँझीझ (कँजेज) । (एक घटनाके लिए कई कारन(कारण) होते हैं और दुर्धना के लिए बुहतेरे कारन(कारण) होते हैं ।) अपने हिसाब के बगैर एक मच्छर भी नहीं काट सकता ? हिसाब है इसलिए ही दण्ड आया है । इसलिए जो छूटना चाहताहै उसं तो यही बात समझनी है कि खुद के साथ जो जो हुआ सो न्याय ही है । “हुआ सो ही न्याय(जो हुआ, वही न्याय)” इस ज्ञान का जीवन में जितना उपयोग होगा उतनी शांति रहेगी और ऐसी प्रतिकूलता में भी भीतर एक परमाणु भी चलायमान नहीं होगा ।

डॉ. नीरूबहन अमीन के जय सच्चिदानंद ।

छोडके निकल भागना । अरे एक क्षण (2) भी किसी अवस्थामें चिपके रहने जैसा नहीं है । तब फिर और सभीकी तो बात ही क्या करें ? कही तू चिपका अर्थात् तू स्वरूप को भूला ।

यदि भूलकर भी तू किसीके टकरावमें आ गया तो उसका फ़ैसला कर डालना । हौले से उस टकराव में से बिना घर्षण किए निकल जाना ।

ट्राफिकके लाँसे टले टकराव !

जैसे हम यह रोड (रास्ते) पर देखभाल कर चलते हैं न ! फिर सामनेवाला मनुष्य कितना भी बुरा हो और हमसे टकरा जाये और हमारा नुकशान करे वह अलग बात है, लेकिन हमारा इरादा नुकशान पहुँचानेका नहीं होना चाहिए । हम उसे नुकशान पहुँचाने जायें तो वह हमाराही नुकशान होनेवाला है । अर्थात् प्रत्येक टकरावमें सदैव दोनोंका नुकशान होता है । अप सामनेवालेको दुःख पहुँचायेंगे तो साथ-साथ वैसे ही ओन धी मोमेन्ट (उसी क्षण) आपको भी दुःख पहुँचे बगैर नहीं रहेगा । ये टकराव है इसलिए मैंने यह उदाहरण दिया है कि मार्ग यातायातका धर्मका क्या है कि टकराओगे तो मर जाओगे, टकरानेमें जोखिम है । इसलिए किसीके साथ टकराना मत । इसी प्रकार व्यावहारिक कार्योंमें भी टकराना नहीं । टकरानेमें जोखिम ही है सदैव । और टकरानेका कभी-कभी होता हा । महिनेमें थोड़े दो सौ वक्त होता है ? मनिहनेमें कितनी बार होता होगा ऐसा ?

प्रश्कर्ता : कोई दफ़ा! दो-चार बार ।

दादाश्री : हाँ, तो उतना सुधार लें हम! मैं क्या कहना चाहता हूँ किस लिए बिगाड़ें हम ? अवसरोंको बिगाड़ना हमें शोभा नहीं देता । ये सभी ट्राफिकके लाँझ (यातायात के नियम) हैं, उन लाँझ (नियमों)के आधार पर चलता है, उसमें अपनी समझसे कोई नहीं चलता न ? और इसमें अपनी समझसे ही । कानून नहीं । उस ट्राफिक में कभी भी बाधा नहीं आती, वह कैसा सुचारु रूपसे व्यवस्थित चलता है । अब (3) इन कानूनोंको आप समझकर चलें तो फिर कोई बाधा नहीं होगी । अर्थात् इन

टकराव टालिए

मत करना टकराव

“किसीसे टकराव मत करना और टकाव टालना ।”

हमारे यह एक वाक्यका जो आराधन करेगा तो आखिर मोक्ष तक पहुँचेगा । तेरी भक्ति और हमारी वचन शक्ति सारा काम कर देगी । सामने वालेकी तत्परता चाहिए । हमारे एक ही वाक्यका यदि कोई पालन करें तो वह मोक्षमें ही जायेगा । अरे, हमारा एक शब्द, “ज्यों का त्यों” पूरा का पूरा निगल जाये तो भी मोक्ष हस्तगत हो जाये ऐसा है । लेकिन उसे “ज्यों का त्यों” निगल जाना चाहिए ।

हमारे एक शब्दका एक दिन पालन करे तो गजबकी शक्ति उत्पन्न होगी ! भीतर इतनी शक्तियाँ भरी पडी है कि किसी भी तरहसे कोई टकराव आ जाये फिर भी उसे टाल सकें । जो जान-बुझकर गर्तामें घँसनेकी तैयारी है, उनके साथ टकराने बैठे रहना है ? वेतो कभी भी मोक्षमें नहीं जायेंगे उपरसे तुझे भी अपने साथ बिठाये रखेंगे । अबे, यह कैसे पुसार्यगा ? यदि तुझे मोक्षमें ही जानाहो तो असोके साथ ज्यादा लाल बुझक्कड भी नहीं होना है । सभी औरसे चोतरका सावधान रहना, वर्ना यदि तुम्हें इस जंजालसे छूटना है तोभी संसार छूटने नहीं देगा । इसलिए घर्षण उत्पन्न किए बगैर “स्मूघली” (हौलेसे) बाहर निकल जाना है । अरें, हम तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि तेरी धोती झाँखरेमें फँस गई हो और तेरी मोक्षकी गाडी उढनेवाली हो तो मुआ धोती छूडाने मत बैठे रहना ! धोती

कानूनोंको समझने में भूल है । कानून समझानेवाला समझदार होना चाहिए ।

ये ट्राफिक लॉज़ (यातायात के नियम) पालनेका आपने निश्चय किया होता है, तो कैसा सुंदर पालन होता है । उसमें अहंकार क्यों जागृत नहीं होताकि वे भले कुछ भी कहें लेकिन हम तो ऐसा ही करेंगे । क्योंकि उन ट्राफिक लॉज़में (यातायातके नियम) वह खुद ही अपनी बुद्धिसे इतना तो समझ सकता है, स्थूल है इसलिए, कि हाथ कट जायेगा, तुरन्त मर जाऊँगा । ऐसे इस टकराव करने पर इसमें मौत होगी यह मालूम नहीं है । इसमें बुद्धि नहीं पहुँच सकती । यह सूक्ष्म बात है । इसके सभी नुकशान सूक्ष्म होते हैं ।

प्रथम प्रकाशित हुआ यह सूत्र !

इक्यावनकी सालमें एक भाईको यह एक शब्द दिया था । मुझसे वह संसार पार करनेका रास्ता पूछ रहा था । मैंने उसे “टकराव टाल” कहा था और इस प्रकार उसे समझाया था ।

वह तो ऐसा हुआ था कि मैं शास्त्र पढ़वा था, तब आकर मुझसे कहा कि, “दादाजी मुझे कुछ ज्ञान दीजिए।” वह मेरे यहाँ नौकरी करता था । तब मैंने उससे कहा, “तुझे क्या दूँ ? तू तो सारी दुनियाके साथ लड़-झगड़ कर आता है, मार पीट करके आता है ।” रेल्वेमें भी गड़बड़ करता, वैसे पैसोंका पानी करता और रेलवेमें जो कानूनन् भरना पडे वह नहीं भरता औऱ उपर से झगडे करता, यह सब मैं जानता था । इसलिए मैंने उससे कहा कि, “तुझे सिखाकर क्या करना ? तू तो सबसे टकराता फिरता है !” तब मझसे कहा कि, “दादाजी यह ज्ञान जो आप सभीखो कहते हो, वह तो मुझे कुछ सिखाईए ।” मैंने कहा, “तुझे सिखाकर क्या लाभ ? तू तो हररोज गाड़ीमें मारपीट, गड़बड़ करके आता है ।” सरकारमें दस रूपये भरने पडे ऐसा सामान मुक्तमें लाता और लोगोको बीस रूपयेके चाय-पानी पिला देता ! अर्थात हमारे तो दस बचे नहीं उलटे दसका ज्यादा खर्च होता ऐसा नॉबल आदमी.

(4) उसे “आइए आइए ” कहा तो वह खुश खुश हो जाता । तब फिर मुझे कहता है, “यह आप मुझे कुछ ज्ञान सिखाइए ।” मैंने कहा, “तू हररोज लड़-झगड़कर आता है । हररोज मुझे सुनना पडता है ।” “फिरभी दादा कुछ दीजिए, कुछ तो दीजिए मुझे ।” उकने मुझसे बिनती की । तब मैंने कहा, “एक वाक्य देता हूँ जो पालन करे तो ।” तब कहने लगा, “अवश्य पालन करूँगा ।” मैंने कहा, “किसीसे भी टकराव में मत आना ।” तब पूछा, “दादाजी, टकराव माने क्या ? यह मुझे बताइए, समझाइए ।”

मैंने कहा कि, “हम सीधे जा रहें हो और बीचमें खंभा आये तो हम हटकर जायें या खंभेसे टकराये ? ” तब उसने कहा, “नहीं टकराने से तो सिर फूट जायेगा ।” मैंने पूछा, “यहाँ सामने से भैंस आती हो तो तू ऐसे घूमकर जायेगा कि उससे टकराकर जायेगा ।” तब कहे, “टकराकर जाऊँगा तो मुझे मारेगी, इसलिए ऐसे घूमकर जाता होगा ।” फिर पूछा, “साप आता हो तब ? बड़ा पत्थर पड़ा हो तब ?” तब कहे, “वहाँ भी घूमकर ही जाना होगा ।” मैंने पूछा, “किसे घूमना चाहिए ?” उसने कहा, “हमे घूमना चाहिए ।” मैंने कहा, “क्यों ?” तब बताया, “हमारे सुखके खातिर, हम टकरायेंगे तो हमें लगेगा न !” तब मैंने समझाया, “इस दुनियामें कुछ लोग पत्थर जैसे हैं, कुछ लोग भैंसके समान हैं, कुछ गैयाकी तरह हैं, कुछ मनुष्य जैसे हैं, कुछ साँप जैसे हैं, और कुछ खंभे के समान हैं हर तरह के लोग हैं उनसे अब तू टकरावमें मत आना । ऐसे रास्ता निकालना ।”

यह समझ उसे १९५१में दी थी । तबे आजतक उसके पालनमें उसने कोई कसर नहीं छोड़ी । वह किसीके टकरावमें आया ही नहीं है, वे जान गये कि यह टकराव में आता नहीं है इसलिए वे जान बूझकर बार बार छेडते रहे ! व उसे इधर से छेंडे तो वह उधरसे निकल जाये । और उधरसे छेडे तो इधरसे निकल जाये । छूने नहीं दे . किसीके भी टकराव में आया ही नहीं है, १९५१ के बाद ।

व्यवहार में टालिए टकराव इस तरह ।

हम रेलगाडीके डिब्बेसे बाहर निकले और तुरन्त उन कुलियों को “ओ इघर आ, इघर आ !” वे दो-चार दौड़कर आये। “चल उठा ले ।” सामान उठानेके बाद पैसे देते समय, बाहर निकलकर शोर मचाये। “मास्टर को बुलाता हूँ. इतने पैसे होते होंगे ? तू ऐसा है, वैसा है ।” आदि, अरे मुए नहीं करे ऐसा वहाँ पर टकराव मत करना । वह ढाई रूपये कहता है तो हमें उसे फुसला-पटाकर करना चाहिए “भैया वास्तव में रूपया होता है पर तू दो ले ले चल ।” हम समझें कि फँस गये है इसलिए कम ज्यादा देकर निबटारा करलें । वहाँ टकराव नहीं करना चाहिए, वरना वह अकुलाये, घरसे अकुलाया हुआ तो होवे ही इस पर स्टेशन पर क्रजिया करें तो वह मरा भैसे जेसा है कही चाकु घुसेड दे यह । तैलीस टके पर मनुष्य हुआ, बत्तीस टके भैसा ।

(6) कोई मनुष्य ज्यादा बोले तो वह कुछ भी बोले पर हमसे टकराव नहीं होना चाहिए । वह धर्म है । हाँ, शब्द तो कैसे भी हो । शब्दकी कुछ ऐसी शर्त नहीं होती कि “टकराव ही करना होगा ।” यह तो सुबह तक टकराव करनेवाले लोग है । और हमारी वजहसे सामनेवाले को बखेड़ा हो ऐसा बोलना यह बहुत बड़ा गुनाह है । उल्टे कोई बोला हो तो उसे टाल देता है, उसका नाम मनुष्य कहलाये !

सहन मत करें, सोल्युशन लायें !

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो टकराव टालने को कहा, इसका अर्थ सहन करना ऐसा होता है न ?

दादाश्री : टकराव टालना अर्थात् सहन करना नहीं । सहन करोगे तो कितना करोगे ? सहन करना और “स्पींग” दबाना वे दोनों एक से है । “स्पींग दबाकर कितने दिन रख सकोगे ?” इसलिए सहन करनेका तो सिखना ही नहीं । सोल्युशन (उपाय) लाना सिखो । अज्ञान दशामें तो

सहन करना ही होता है । बादमें एक दिन “स्पींग” उछले और सब गिरा दे, लेकिन वह तो कुदरत का नियम ही ऐसा है ।

ऐसा संसारका कानून ही नहीं कि किसीके खातिर हमें सहन करना पड़े । जो कुछ सहना पड़ता है । दूसरों के निमित्तसे वह हमारा ही हिसाब होता है । लेकिन हमें पता नहीं चलता कि किस बही खाते का और कहाँका माल है, इसलिए हम ऐसा मानते है कि इसने नया माल उधार देना शुरू किया । नया कोई उधार देता ही नहीं, दिया हुआ ही वापस आता है । हमारे ज्ञानमें सहन करनेका आता ही नहीं है । ज्ञानसे तलाश कर लेना कि सामनेवाला “शुद्धात्मा” है । यह जो आया वह मेरे ही कर्मके उदयसे आया है, सामनेवाला तो निमित्त है । फिर हमें यह “ज्ञान” इटसेल्फ (खुद) ही पझल सोल्व (गुत्थी सुलझा देगा) कर दे ।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि मनमें समाधान लेना कि जो माल था वह वापस आया ऐसा न ?

(7) **दादाश्री :** वह खुद शुद्धात्मा है और यह उसकी प्रकृति है । प्रकृति यह फल देती है । हम सुद्धात्मा है, वह भी शुद्धात्मा है । अब दोनों आमने-सामने सब हिसाब चुकता करते है । उसमें यह प्रकृतिके कर्मके उदयकी वजहसे वह देता है कुछ । इसलिए हमने कहाकि यह हमारे कर्मका उदय है और सामनेवाला निमित्त है, वह लौटा गया इसलिए हमारा हिसाब चुकता हो गया । यह “सोल्युशन” (हल) हो वहाँ फिर सहन करनेका रहता ही नहीं न !

ऐसा स्पण्टीकरण नहीं करोगे, तो सहन करने पर क्या होगा ? एक दिन वह “स्पींग” (कमान) छटकेगी । “स्पींग” (कमान) छटकते देखी है आपने ? मेरी “स्पींग” (कमान) बहुत छटकती थी । कई दिनों तक मैं सब सहन करता रहूँ और फिर एक दिन छटकते ही सब अस्त-व्यस्त कर दूँ । यह सब अज्ञान दशाका, मुझे उसका ख्याल है, मेरे लक्षमें है वह । इसलिए तो मैं बोल देता हूँ न कि सहन करना तो सिखना ही नहीं । वह तो

अज्ञान दशामें सहन करनेका होता है। यहाँ तो हमें स्पष्टीकरण कर लेना कि इसका परिणाम क्या ? उसका कारण क्या ? बहीखातेमें विधिवत देख लेना कोई चीज़ बहीखाते के बाहरकी होती नहीं है।

टकराये, अपनी ही भूलके कारण !

इस दुनियामें जहाँ कहीं टकराव होता है वह आपकी ही भूल है, सामनेवालेकी भूल नहीं है ! सामनेवाले तो टकरानेवाले ही है। “आप क्यों टकराये ?” तब कहें, “सामनेवाला टकराया इसलिए !” तो आप अंध कि वह अंधा हो गया ?

प्रश्नकर्ता : टकराव से टकराव करें तब क्या होगा ?

दादाश्री : सिर फूट जायेगा ! तो टकराव होने पर हमें क्या समझ जाना है ?

प्रश्नकर्ता : हमारी ही गलती है।

दादाश्री : हाँ, और उसे तुरन्त एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेना। टकराव हुआ इसलिए हमें देखना हा कि “ऐसा मैंने क्या कह (8)दिया कि टकराव हो गया ?” अपनी भूल मालूम हो कि हो गा निवारण, फिर पज़ल सॉल्व (गुत्थी सुलझ गई) हो गया। वर्ना, जहाँ तक हम “सामनेवालेकी भूल है” ऐसा खोजते फिरेंगे तब तक यह पज़ल सॉल्व नहीं होगा। “हमारी भूल है” ऐसा स्वीकीर करोगे तभी इस संसारका पार पाओगे। दूसरा कोई उपाय ही नहीं है। दूसरे सभी उपाय उलझानेवाले हैं और उपाय करना वह हमारा अंदरूनी गुप्त अहंकार है। उपाय किसलिए खोजते हो ? सामनेवाला हमारी भूल निकाले तो हमें ऐसा कहना है कि “मैं तो पहले से ही टेढ़ा हूँ।”

बुद्धिसे ही संसारमें टकराव होता है। अरे एक औरतके कहने पर चलने पर भी पतन होता है, टकराव होता है, तब तो यह तो बुद्धिबाई ! उसकी सुनने पर तो कहाँ से कहाँ जा गिरे। अरे रात दो बजे जगाकर

बुद्धिबाई उलटा दिखाये। औरत तो अमुक समय ही साथ होगी मगर बुद्धिबाई तो निरंतर साथ ही साथ रहेगी। तब बुद्धि तो ‘डीथ्रोन’ ! (पदभ्रष्ट) कराये ऐसी है।

अगर आप मोक्ष ही पाना चाहते हैं त बुद्धिकी एक नहीं सुननी होगी। बुद्धि तो ऐसी है कि ज्ञानी पुरुषका भी उलटा दिखाये। अबे, जिसके कारन तुझे मोक्ष प्राप्त हो ऐसा है, उसका ही उलटा देखा ? इससे आपका मोक्ष आपसे अनंत अवतार दूर हो जायेगा।

टकराव यही हमारी अज्ञानता है। किसीके साथ टकराव हुआ, वह हमारी अज्ञानता की निशानी है। खरा-खोटा भगवान देखते ही नहीं। भगवान तो यही देखते हैं कि, “वे कुछ भी बोले मगर कही टकराये तो नहीं है न ?” तब कहे, “नहीं” बस हमें इतना ही चाहिए। अर्थात खरा-खोटा भगवान के यहाँ होता ही नहीं है, वह तो ये लोगोके यहाँ है। भगवानके यहाँ तो द्वंद ही होता नहीं है न!

टकराये, वे सभी दीवारें !

दीवार टकराई तब दीवारकी भूल कि हमारी भूल ? दीवारके पास हम न्याय माँगे कि “खिसक जा, खिसक जा।” तब ? (9) और हम कहें कि, “मैं यहाँ होकर ही जाऊँगा” तब किसका सिर फूट जायेगा ?

प्रश्नकर्ता : हमारा

दादाश्री : अर्थात किसे सावधान रहना होगा ? उसमें दीवारको क्या ? उसमें दोष किसका ? जिसे लगा उसका दोष। अर्थात जगत दीवार के जैसा है।

दीवारसे टकराने पर दीवार के साथ मतभेद होगा सही ? दीवारसे या किसी समय किवाड़से आप टकरा गये, तो उस समय किवाड़के साथ अथवा दीवार के साथ मतभेद होगा ?

प्रश्नकर्ता : वह किवाड़ तो निर्जीव वस्तु है न ?

दादाश्री : अर्थात् जीवितके लिए ही आप ऐसा मानते हैं कि यह मुझसे टकराया, इस दुनियामें जो टकराती है वे सारी निर्जीव वस्तुएँ होती हैं . टकराये वह जीवित नहीं होती, जीवित टकराती नहीं निर्जीव वस्तु टकरायेगी इसलिए आप उसे दीवार जैसी ही समझ ले अर्थात् गड़बड़ नहीं करने की ! वैसे थोड़ीदेर बाद करना, “चलिए चाय बनाइए ।”

अभी एक बच्चा पत्थर मारे और खून निकल आये तब बच्चेसे क्या करोगे ? गुस्का करेंगे । और आप जा रहे हैं और पहाड़ परसे एक पत्थर गिरा, वह लगा और खून निकला तब फिर क्या करोगे ? गुस्सा करेंगे ? नहीं । उसका क्या कारन ? वह पहाड़ परसे गिरा है । बादमें लड़का पछता रहा हो कि मुझसे यह क्या हो गया । यह पहाड़ परसे गिरा, वह किसने किया ?

इसलिए इस दुनियाको समझो । मेरे पास आये तो चिंता नहीं हो ऐसा आपको कर दूँ । और संसारमें अच्छी तरह रहें और वाईफके साथ चैनसे घूमें फिरें । लड़के -लड़कियोंकी चैनसे शादियाँ रचायें । फिर वाईफ खुश हो जायेगी, “कहना पड़े कैसे सयाने कर दिए, मेरे पतिको !” कहेगी ।

अब वाईफको किसी पड़ोसनके साथ टंटा हो गया ह और उसका (10) दिमाग गरम हो गया हो और हमारे बाहरसे आने पर वह उग्रतासे बात करे, तब हम क्या करें फिर ? हम भी उग्र हो जायें ? ऐसे संयोग आते हैं, वहाँ पर एडजस्ट (अनुकूल) होकर चलना चाहिए हमें । आज वह किस संयोगसे क्रोधित हुई है, किसके साथ क्रोधित हुई है क्या मालूम ? इसलिए हम पुरुष हुए, मतभेद नहीं होने दे । वह मतभेद खड़ा करे तो मना लेना । मतभेद अर्थात् टकराव !

सायन्स (विज्ञान) समझने जैसा !

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेष नहीं करना हो पर सामने से आकर झगड़ने

लगे तब क्या करें ?

दादाश्री : इस दीवारके साथ झगड़ेगे तो कितना समय झगड़ सकें ? इस दिवारसे एक दिन सिर टकराया, तो हमें उसके साथ क्या करना ? सिर टकराया इसलिए हमारी दीवारसे मुढभेड़ हो गई, अब क्या दीवारको फटकारते रहेंगे ? इसी प्रकार ये जो बहुत क्लेष कराते हैं वे सभी दीवारे हैं ! इसमें सामने वाले को क्या देखना हमें अपने आप समझ लेना हैं कि ये दीवारोंके समान है, ऐसा समझनेके बाद कोई तकलीफ नहीं है ।

प्रश्नकर्ता : हमारे मौन रहने पर सामनेवाले को उलटा असर होता है कि दोष इनका ही है और ज्यादा क्लेष करते हैं ।

दादाश्री : यह तो हमने मान लिया है कि मैं मौन रहा इसलिए ऐसा हुआ । रातमें मनुष्य उठा और बाथरूम जाते अंधेरेमें दीवारसे टकराया, तो वहाँ हमारे मौनकी वजहसे वह टकराई ?

मौन रहें ? बोलें उसे स्पर्श ही नहीं करता, कुछ लेना-देना नहीं । हमारे मौन रहनेसे सामनेवालों असर होता है ऐसा कुछ होता नहीं है कि हमारे बोलने से असर होता है ऐसा भी कुछ नहीं है . “ओन्ली सायन्टिफिक सरसमस्टेन्शियल एविडन्स” (केवल वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) है । किसीकी जरा सी भी सत्ता नहीं है । जरासी सत्ता बगैरका जगत उसमें कोई क्या करनेवाला है ? इस दीवार को यदि (11) सत्ता होती तब इसको सत्ता होती । इस दीवारक हमसे लड़ने की सत्ता है ? ऐसा सामनेवालेको है । और उसके निमित्तसे जो टकराव है वह तो होनेवाला ही है । व्यर्थ शोर मचानेका क्या मतलब ? उसके हाथमें सत्ता ही नहीं है वहाँ । इसलिए आप दीवार के समान हो जाइए न ! आप बीवीको झिड़कियाँ पे झिड़किया देता है । और वह भगवान बैठे हैं, वे नोट करें कि यह मुझे झिड़किया देता है । और वह आपको झिड़कियाँ देने लगे तब आप दीवार के समान हो जायें तो आपके भीतर बैठे हुए भगवान आपको ‘हेल्प’ (मदद) करे ।

इसलिए हमारी भूलकी वजहसे ही दीवार टकराती है । उसमें दीवारका कसूर नहीं है । तब लोग मुझसे पूछते हैं कि, “ये लोग सभी क्या दीवार है ?” तब मैं कहता हूँ कि, “हाँ, लोग वे भी दीवार ही है ।” यह मैं देखकर कहता हूँ । हय कोई गप नहीं है ।

किसीके साथ मतभेद होना और दीवारसे टकराना, ये दोनो बाते समान है । दोनोंमें भेद नहीं है । यह दीवारसे जो टकराता है वह नहीं दिखनेकी वजहसे टकराता है और वह मतभेद होता है वह भी नहीं दिखनेकी वजहसे मतभेद होता है । आगाका उसे दिखता नहीं है । ये क्रोध-मान-माया-लोभ आदि होते हैं वे नहीं दिखने की वजह से ही सभी होते हैं ! यह बात इस तर है यह तो समझना होगा न ! लगा उसका दोष न, दीवारका इसमें क्या दोष ? तब इस संसारमें सभी दीवारे ही है । दीवारके टकराने पर उसके साथ खरी-खोटी करने हम नहीं जाते हैं न ? “यह मेरा सही है” ऐसे लड़नेकी झंझटमें हम नहीं पड़ते न ? ऐसा यह दीवार के समान ही है । इसके साथ खरा करवाने की जरूरत ही नहीं है ।

जो टकराते हैं वे दीवारे ही है ऐसा हम समझ ले । फिर “किवाड़ कहाँ है इसकी खोज करेंगे तो अंधेरी में किवाड़ मिल जायेगा । ऐसे हाथसे टटोलते टटोलते जाने पर दरवाजा मिले कि नहीं मिले ? और वहाँसे फिर खिसक जायें, टकराये नहीं । ऐसा कानून पालना चाहिए कि किसीके टकरावमें आना नहीं है ।”

(१२) जीवन ऐसे जीयें !

बाकी, यह तो जीवन जीना ही नहीं आता । ब्याहना नहीं आया तब बड़ी मुश्किलसे ब्याहे ! बाध होना नहीं आता और ऐसे ही बाप हो गया । बच्चे खुश हो जायें ऐसा जीवन होना चाहिए । सबेरे सभी साथ मिलकर तय करना चाहिए कि, “भाई आज किसीकी आमने सामने टक्कर नहीं होनी चाहिए ऐसा हम सोच ले ।” टकरावसे फायदा होता हो तो मुझे बताइए । क्या फायदा होता है

प्रश्नकर्ता : दुःख होता है ।

दादाश्री : दुःख होता है इतना ही नहीं, इस टकराव से अभी तो दुःख दुआ मगर सारा दिन बिगड़े और अगले जनममें फिर मनुष्यत्व जाता रहें । मनुष्यत्व तो कब रहेगा कि सज्जनता होगी तो मनुष्यत्व रहेगा । लेकिन पाशवता हो, बार-बार घूँसे लगाये बार-बार सींग मारते रहें, फिर वहाँ पर मनुष्यत्व आये ?! गायें-भैंसों सींग मारे या मनुष्य मारे ?

प्रश्नकर्ता : मनुष्य ज्यादा मारे ।

दादाश्री : मनुष्य मारे तो फिर उसे जानवर की गति प्राप्त होगी । अर्थात् वहाँ पर दो के बदले चार पैर और उपरसे दूम मिलेगी ! वहाँ पर कुछ ऐसा वैसा है ! वहाँ क्या दुःख नहीं है ? बहुत है । थोड़ा समझना होगा न, ऐसा कैसे चलेगा सब !

टकराव, वह तो अज्ञानता ही हमारी !

प्रश्नकर्ता : जीवनमें स्वभाव नहीं मिलते, इससे टकराव होता है न ?

दादाश्री : टकराव होता है, उसका नाम ही संसार है !

प्रश्नकर्ता : टकराव होनेका कारन क्या है ?

दादाश्री : अज्ञानता । जहाँ तक किसीके भी साथ मतभेद होता है, वह आपकी निर्बलता की निशानी है । लोग गलत नहीं है । मतभेदमें कसूर आपका है । लोगोका कसूर होता ही नहीं है । वह जान-बुझकर करता हो तो हमें वहाँ पर क्षमा माँग लेनी चाहिए कि, “भैया यह मेरी समझमें नहीं आता है ।” बाकी, लोग भुल करते ही नहीं है, लोग मतभेद होने दे ऐसे हैं ही नहीं । जहाँ टकराव हुआ वहाँ हमारी ही भूल है ।

प्रश्नकर्ता : टकराव टालना हो और खंभा बीचमें खड़ा हो तब हम बाजू परसे खीसक जायें, पर खंभा खुद आकर हम पर गिरे तब क्या

करना ?

दादाश्री : आ गिरे इसलिए फिर खीसक जाना ।

प्रश्नकर्ता : कितना भी खीसक जायें फिर भी खंभा हमसे टकराये बिना नहीं रहेता । उदाहरण के तौर पर खुदकी पत्नी टकराये ।

दादाश्री : टकराये, उस घड़ी पर हमें क्या करना चाहिए यह खोज निकालें ।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला मनुष्य हमारा अपमान करे और हमें अपमान लगे, उसका कारन हमारा अहंकार है ?

दादाश्री : वास्तवमें सामनेवाला अपमान करता है, वह हमारे अहंकार को पिघला देता हैष और वह भी “ड्रामेटिक” (नाटकीय) अहंकार जितना एक्सेस (ज्यादा) अहंकार हो वह पिघले, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है ? ये कर्म छूटने नहीं देते । हमारे तो छोटा बच्चा सामने हो तब भी कहना है, अब छूटकारा कर ।

समावें सब सागरके समान उदरमें !

प्रश्नकर्ता : दादा, व्यवहारमें बड़ा छोटेकी भूल निकालने, छोटा अपनेसे छोटेकी भूल निकाले, व्युपोईन्ट (द्रष्टि बिंदु) के टकरावमें, ऐसा क्यों ?

दादाश्री : यह तो ऐसा है कि बड़ा छोटेको खा जाये । इससे बड़ा छोटेकी भूल निकाले । इसके बजाय हम ही कहें कि हमारी ही भूल है । भूलका स्वीकार करले तब उसका हल निकले । हम क्या करते ? दूसरा यदि सहन नहीं कर सके तो हम खुदके उपर ले लें, दुसरेकी गलतियाँ नहीं निकालें । इसलिए दूसरोंको क्या कर दे ? हमारे पास सागरके समान उदर है ! देकोन, बम्बईकी सारी की सारी गटरों पानी सागर खुदमें समाता है ! देखो न, बम्बईकी सारी की गटरों पानी सागर खुदमें समाता है न ? ऐसे

हम भी पी लें । इससे क्या होगा कि, ईन बच्चों पर और सभी लोगों पर प्रभाव पडेगा । वे भी सिखेंगे । बच्चे भी समझ जायें कि इनका सागर समान उदर है ! जितना आये उतना जमा करलो । व्यवहारमें नियम है कि अपमान करनेवाला अपनी शक्ति देकर जाता है । इसलिए अपमान ले ले हँसते मुख !

“न्याय स्वरूप,” वहाँ उपाय तप!

प्रश्नकर्ता : टकराव टालने की, “समभावी निकाला” करने की हमारी वृत्ति होवे, फिर भी सामनेवाला मनुष्य हमें परेशान करे, अपमान करे, तब हमें क्या करना चाहिए ?

दादाश्री : कुछ नहीं । वह हमारा हिसाब है इसलिए हमें उसका “समभावी निकाल” करना है ऐसा तय करना । हम अपने कानूनकाही पालन करें और अपने आप अपना पझल सॉल्व (समस्य का समाधान) किया करें !

प्रश्नकर्ता : यह टकराव होता है वह व्यवस्थिके आधार पर ही होगा न ?

दादाश्री : हाँ, टकराव जो है वह “व्यवस्थित” के आधार पर सही मगर ऐसा कब कहलाये ? टकराव हो जानेके पश्चात । “हमें टकराव नहीं करना है ” ऐसा हमारा निश्चय हो । सामने खंभा दिखने पर हम देखेंकि खंभा आ रहा है, बाजू परसे जाना होगा, टकराना तो है ही नहीं, लेकिन फिर भी टकराव हो जाये तब हम कहेंगे कि “व्यवस्थित है ।” पहलेसे ही “व्यवस्थित है” ऐसा मानकर आगे बढ़े तब तो “व्यवस्थित”का दुरुपयोग हुआ कहलाये ।

(15) घर्षणसे हनन शक्तियोंका !

सारी आत्मशक्ति जो यदखित्म होती हो तो वह घर्षण से । संघर्ष

से जरा भी टकराये तो खतम । सामनेवाला टकराये तब हमें संयम रखना चाहिए । टकराव तो होना ही नहीं चाहिए । फिर चाहें यह देह जानी हो तो जाये, मगर टकरावमें नहीं आना चाहिए एक घर्षण नहीं हो तत मनुष्य मोक्षमें जायें । किसीने सिख लिया कि मुझे घर्षणमें आना ही नहीं है । तो फिर उसे बीचमें सिख लिया कि मुझे घर्षणमें आना ही नहीं तो फिर उसे बीचमें गुरु की या किसीकी भी जरूरत नहीं है । एक या दो अवतारमें सीधा मोक्षमें जाये । “घर्षणमें आना ही नहीं है ।” ऐसा यदि उकसी श्रद्धामें बैठ गया और निश्चय ही हो गया, तो तबसे ही समकित हो गया ! अर्थात् जो यदि किसीको समकित करना हो तो हम गारन्टी हेते हैं कि जाइए, घर्षण नहीं करनेका निश्चित कीजिए वहाँसे समकित हो जायेगा । देहका टकराव हुआ हो तो दवाई करनेसे मीट जायेगा । लेकिन घर्षण अऔ संघर्षणसे मनमें जो दाग़ लगे हो बुद्धि पर दाग़ लगे हो उसे कौन निकाले ? हजार अवतार करने परभी नहीं जाये ।

प्रश्नकर्ता : घर्षण और संघर्षणसे मन और बुद्धि पर घाव पडते हैं ?

दादाश्री : अरे ! मन पर, बुद्धि पर तो क्या सारे अंतःकरण पर घाव पडते रहें और उसका असर शरीर पर भी होगा । इसलिए घर्षणसे कितनी सारी मुसीबतें हैं ।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं, घर्षणसे सारी शक्तिर्या खत्म हो जाये । तो जागृतिसे शक्ति वापस आयेगी सही ?

दादाश्री : शक्तिर्या खींचनेकी जरूरत नहीं है । शक्तिर्या तो है ही । अब उत्पन्न होती है । पहले जो घर्षण हुए थे और उससे नुकशान हुआ था, वह भरपाई होता है । पहले जो घर्षण हुए थे और उससे नुकशान हुआ था, वह भरपाई होता है । लेकिन अब यदि नया घर्षण पैदा करें तो फिर शक्ति जाती रहेगी । आयी हुई शक्ति भी जाती रहेगी और खुद घर्षण होने ही नहीं दे तो शक्ति उत्पन्न होती ही रहेगी !

(16) इस संसारमें बैरसे घर्षण होता है । संसारका मूल बीज बैर है । जिसके बैर और घर्षण दो बंध हो गये उसका मोक्ष हो गया । प्रेम बाधक नहीं, बैर जाये तो प्रेम उत्पन्न हो जाये ।

कॉमनसेन्स, एवरीव्हेर एप्लिकेबल !

(व्यवहार-समझ, हर जगह काम आये!)

व्यवहार शुद्धिके लिए क्या चाहिए य “कोमनसेन्स” कम्पलीट (संपूर्ण व्यवहारिक समझ) चाहिए । स्थिरता-गंभीरता चाहिए । व्यवहारमें “कोमनसेन्स” की जरूरत । “कोमनसेन्स” अर्थात् “एवरीव्हेर एप्लिकेबल” (हर जगह काम आये) स्वरूप ज्ञान के साथ “कोमनसेन्स” होने पर बड़ी शोभा दे ।

प्रश्नकर्ता : “कोमनसेन्स” कैसे प्रकट हो ?

दादाश्री : कोई खुदसे टकराये पर खुद किसीसे नहीं टकराये, इस तरह रहे, तो “कोमनसेन्स” उत्पन्न होगी । लेकिन खुद किसीसे टकराना नहीं चाहिए, वर्ना “केमनसेन्स” जाती रहेगी ! घर्षण अपनी औरसे नहीं होना चाहिए ।

सामनेवाले के घर्षणसे “कोमनसेन्स” उत्पन्न होती है । यह आत्माकी शक्ति ऐसी है कि घर्षणके समय कैसा बर्ताव करना उसके सारे उपाय दिखा दे और एक बार दिखानेके पश्चात् वह ज्ञान जायेगा नहीं । ऐसा करते करते “कोमनसेन्स” जमा होती है । मेरे खास घर्षण नहीं होनेवाला, मेरी “कोमनसेन्स” जबरस्त है इसलिए आप क्या कहना चाहते हैं वह तुरन्त ही समझमें आ जाये । लोगोंको ऐसा लगे कि यह दादाका अहित कर रहा है, पर मेरी समझमें तुर्त आ जाये कि यह अहित, अहित नहीं है । सांसारिक अहित नहं है और धार्मिक अहित भी नहीं है और आत्माके सम्बन्धमें तो अहित है ही नहीं । लोगोको ऐसा लगे कि आत्माका अहित कर रहे हैं, पर हमें उसमे हित समझमें आये । इतना इस “कोमनसेन्स” का

प्रभाव है। इसलिए हमने “कोमनसेन्स” का अर्थ लिखा है कि “एवरीक्वैर एप्लिकेबल”। आजकी जनरेशनमें (पीढ़ी) “कोमनसेन्स” जैसी चीज़ ही नहीं है। जनरेशन टु जनरेशन (पीढ़ी दर पीढ़ी) “कोमनसेन्स” कम होती गई है।

(17) हमारा विज्ञान प्राप्त होनेके प्रश्रयात मनुष्य ऐसे रह सके। अगर तो आम जनता में कोई इकाध मनुष्य उस प्रकार रह सके, ऐसे पुण्यवंत लोग निकलते हैं ! पर वह तो अमुक जगह रह सके, हर जगह नहीं रह सकते।

प्रश्नकर्ता : सभी घर्षणोंका कारन यही है न कि एक “लेयर” (परत) से दूसरे “लेयर” का अंतर बहुत ज्यादा है ?

दादाश्री : घर्षण वह प्रगति है ! जितनी माथापच्ची होगी, घर्षण होगा, उतना उपर उठनेका मार्ग मिलेगा। घर्षण नहीं होने पर जहाँ के तहाँ रहोगे। लोग घर्षण खोजते हैं।

घर्षणसे प्रगतिकी राह पर.....

प्रश्नकर्ता : घर्षण प्रगतिके लिए है ऐसा करके खोजने पर प्रगति होगी ?

दादाश्री : लेकिन ऐसे समझ कर नहीं खोजते। भगवान कुछ उपर नहीं उठा रहे हैं, घर्षण उपर उठाता है। घर्षण हद तक उपर उठा सके, बादमें ज्ञानी मिले तो ही काम होगा। घर्षणतो प्राकृतिक तरीकेसे होता है। नदीमें परस्पर टकरा-टकरा कर गोल होते हैं ऐसे।

प्रश्नकर्ता : घर्षण और संघर्षणमें क्या फर्क है ?

दादाश्री : जिसमें जीव नहीं है वे सभी टकराये, वह घर्षण कहलाये और जीववाले टकराये तब संघर्षण होगा।

प्रश्नकर्ता : संघर्षसे आत्म शक्ति कुंठित होती है न ?

दादाश्री : हाँ, सही है। संघर्ष हो इसमें हर्ज नहीं है, “हमे संघर्ष करना है” ऐसा भाव निकाल देनेको कहता हूँ। “हमें” संघर्ष करनेका भाव नहीं होना चाहिए, फिर चंदूलाल चाहे संघर्ष करे। हमारे भाव कुंठित हो ऐसा नहीं होना चाहिए!

घर्षण कराये, प्रकृति !

प्रश्नकर्ता : घर्षण कौन कराता है ? जड़ या चेतन ?

दादाश्री : पिछले घर्षण ही घर्षण करवाते हैं। जड़ या चेतनका इसमें सवाल ही नहीं है। आत्माकी इसमें कोई दखल ही नहीं है। यह सारा घर्षण पुद्गल ही कराता है। लेकिन जो पिछले घर्षण हैं वे फिरसे घर्षण करवाते हैं। जिसके पिछले घर्षण पूरे हो गये हैं उसको फिरसे घर्षण नहीं होता। वर्ना घर्षणपे घर्षण और उसके उपर घर्षण होते ही रहेत है।

पुद्गल मक्रे क्या कि वह पूरा जड़ नहीं है, वह मिश्र चेतन है। यह विभाविक पुद्गल कहलाता है, विभाविक माने विशेष भावसे परिणाम प्राप्त पुद्गल, वह सब करवाता है। जो शुद्ध पुद्गल है, वह पुद्गल ऐसा-वैसा नहीं करवाता। यह पुद्गल तो मिश्र चेतन हुआ है। आत्माका विशेष भाव और इसका विशेष भाव, दो मिलकर तीकरा रूप हुआ, प्रकृति स्वरूप हुआ। वह सब धर्षण कराता है।

प्रश्नकर्ता : घर्षण नहीं होता, वह सच्चा अहिंसक भाव पैदा हुआ कहलाये ?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं ! लेकिन यह दादाके पाससे जाना कि इस दीवारसे घर्षण करनेसे इतना फायदा, तो भगवानके साथ घर्षण करने में कितना फायदा ? इतना जोखिम समझने पर ही हमारा परिवर्तन होता रहे।

अहिंसा पूर्णरूपसे जानी जाये ऐसी नहीं है और पूर्ण रूपमें समझना बहुत कठीन है । इसके बजाय ऐसा ठान लिया हो कि “घर्षणमें कभी भी नहीं आना ।” तब फिर क्या होगा कि शक्तियाँ अनामत रहा करेगी और दिन-ब-दिन बढ़ती ही रहेगी । फिर घर्षणसे होनेवाला घाटा (19) नहीं होता । कभी घर्षण हो जाये तो घर्षणने बाद प्रतिक्रमण करने पर साफ़ हो जाये । इसलिए यह समझना चाहिए कि जहाँ घर्षण हो जाता है, तो वहाँ प्रतिक्रमण करना चाहिए । वर्ना बड़ी जिम्मेवारी है । इस ज्ञानसे मोक्षमें तो जाओगे, मगर घर्षणके कारन मोक्षमें जाते बाधाएँ बहुत आयेगी और देरसे जा पाओगे !

इस दिवारको लेकर उलटे विचार आये तो हर्ज नहीं है क्योंकि एकपक्षीय घाटा है । जबकि जीवितको लेकर एक उलटा विचार आया कि जोखिम है । द्वीपक्षीय घाटा होगा । लेकिन हम उसका प्रतिक्रमण करे तो सारे दोष धुला जाये । अर्थात् जहाँ जहाँ घर्षण होता है, वहाँ पर प्रतिक्रमण करने पर घर्षण खत्म हो जायेगा ।

समाधान सम्यक ज्ञानसे ही !

प्रश्नकर्ता : दादा, यह अहंकारकी बात घरमेंभी कई बार लागू होती है ष संस्थामें लागू होगी है । दादाका काम करते हो उसमें भी कही अहंकारका टकराव होता है, वहँ भी लागू होती है । वहाँ पर भी समाधान चाहिए न ?

दादाश्री : हाँ, समाधान चाहिए न ! वह हमारे यहाँका ज्ञानवाला समाधान लेगा, लेकिन ज्ञान नहीं हो वहाँ क्या समाधान लेगा ? वहाँ फिर अलग होता जाये, उसके साथ मन अलग होता जाये । हमारे यहाँ अलग नहीं होता !!!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा टकराना नहीं चाहिए न ?

दादाश्री : टकराते हैं, वह तो स्वभाव है । वहाँ ऐसा माल भरकर

लाये हैं, इसलिए ऐसा होता है । यदि ऐसा माल नहीं लाये होते तो ऐसा नहीं होता, अर्थात् हमें समझ लेना चाहिए कि भाईकी आदत ही है ऐसी । ऐसा हम समझे । इससे फिर हमें असर नहीं होगा । क्योंकि आदत आदतवालेकी और “हम” अपनेवाले ! और फिर उसका निकाला हो जाता है । आप अटक गये तब झंझट । बाकी टकराव तो होगा ।(20) टकराव नहीं हो ऐसा तो होता ही नहीं न । वह टकरावकी वजहसे हम एक दूसरेसे अलग नहीं हो जायें यही लक्षमें रखना है केवल । टकराव तो अवश्य होगा । वह तो मर्द-औरत में भी होगा । लेकिन वहाँ साथ ही साथ रहते हैं न बादमें ? ! वह तो होगा । उसमें किसीके पर ऐसा कुछ नियंत्रण नहीं रखा हैकि, टकराना नहीं तुम ।

प्रश्नकर्ता : पर दादा, टकराव नहीं हो ऐसा भाव तो निरंतर रहना चाहिए न ?

दादाश्री : हाँ रहना चाहिए । वही करना है ना । उसका प्रतिक्रमण करना है और उसके प्रति भाव रखना है ! फिरसे ऐसा हो जाये तो फिरसे प्रतिक्रमण करना, क्योंकि एक परत जाती रहे, फिर दूसरी परत जाती रहेगी । ऐसी परतवाला है न ? मैं तो जब टकराव होता था उसकी नोट लेता था कि आज अच्छा ज्ञान पाया ! टकराने से फिसलते नहीं, जागृत अऔ जागृत ही रहते न ! वह आत्माका विटामीन है । अर्थात् इस टकरावमें झंझट नहीं है । टकराव के बाद आमने-सामने अलगाव नहीं हो तो प्रतिक्रमण करके सब समाधान कर लेना चाहिए । हम इन सभीके साथ किस प्रकार मेल रखते होंगे ? आपके साथ भी मेल रहता है, नहीं रहता ? ऐसा है, शब्दोसे टकराव पैदा होता है । मुझे बोलना बहुत पडता है फिर भी टकराव नहीं होता न ?

टकराव तो होगा । टकराव तो ये बरतन खड़कते हैं कि नहीं खड़कते ? पुद्गल स्वभाव है टकराना । लेकिन ऐसा माल भरा होने पर । नहीं भरा हो तो नहीं । हमारा भी टकराव होता था । पर ज्ञान होनेके

पश्चयात टकराव नहीं हुआ है । क्योंकि हमारा ज्ञान अनुभव ज्ञान है और हम निकाला करके आये है, इस ज्ञानसे । सभी निकाला कर-करके आये है और आपको निकाला करना बाकी है ।

दोष घुलें प्रतिक्रमण से !

किसीसे टकरावमें आने पर उसके दोष दिखने लगे और टकरावमें आने पर दोष ढँके रहे । पाँचसौ-पाँचसो दोष प्रतिदिन दिखने लगे तो समझना कि पूर्णाहुति नजदीक आ रही है ।

इसलिए जैसे भी हो टकराव टालिए । यह टकराव करके इस लोकका बिगाड़ते है, पर परलोकका भी बिगाड़ते है । जो इस लोकका बिगाड़ते है वे परलोकका बिगाड़े बगैर नहीं रहेंगे ! जिसका यह लोक सुधरेगा, उसका परलोक सुधरेगा । इस भवमें यदि हमें किसी तरहकी अड़चन नहीं आई हो तो समझना कि परभवमें भी अड़चन नहीं आयेगी । और यहाँ पर अड़चने खड़ी की तो वे सभी वहाँ आनेवाली ही है ।

तीन अवतारकी गारन्टी !

जिसे टकराव नहीं होगा, उसका तीन अवतार के बाद मोक्ष होगा उसकी मैं गारन्टी देता हूँ । टकराव हो जाने पर प्रतिक्रमण कर लेना । टकराव पुद्गलका है और पुद्गल से पुद्गलके टकरावका प्रतिक्रमणसे नाश होता है ।

वह भाग करता हो तो हमें गुणा करना चाहिए ताकि रकम उड़ जाये । सामनेवाले मनुष्यके बारेमें सोचना कि, “उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा ।” यही गुनाह है । यहाँ रास्तेमें जाते समय दीवार टकराने पर उससे क्यों नहीं लड़ते ? पेड़को जड़ कैसे कहेंगे ? जो लगते है व सभी हरे पेड़ ही है । गायका पैर हम पर पड़े तब हम कुछ कहते हैं ? ऐसा इन सब लोगोका है । “ज्ञानी पुरुष” सभीको किस प्रकार क्षमा करे ? वे समझें कि ये बेचारे समझते नहीं है, भीतर ही भीतर तुरन्त प्रतिक्रमण कर लेंगे ।

आसक्ति वहाँ रिक्शन (प्रतिक्रिया) ही !

प्रश्नकर्ता : पर कोई बार हमें द्वेष नहीं करना हो फिरभी द्वेष हो जाता है, उसका क्या कारन ?

दादाश्री : किसके साथ ?

प्रश्नकर्ता : कोई बार पतिके साथ ऐसा हो जाये तो ?

दादाश्री : यह द्वेष नहीं कहलाता । जो असक्तिका प्रेम है वह सदैव रिक्सनरी (प्रत्याधाती) होता है । इसलिए यदि चिढ़ गये तो फिर उलटा चलेंगे, इससे कुछ समय अलग रहेंगे कि फिर प्रेमका उफान आयेगा । फिर प्रेममें चोट आने पर टकराव होगा । इससे फिर प्रेम बढ़ेगा । जहाँ मयाँदासे अधिक प्रेम होगा वहाँ बखेड़ा होगा । अर्थात् जहाँ भी बखेड़ा होता रहता हो वहाँ भीतर से प्रेम होता है इन लोगोको । वह तो प्रेम होने पर ही बखेड़ा होगा । पूर्वजन्मका प्रेम है, तो बखेड़ा होता है । जरूरतसे ज्यादा प्रेम है वर्ना बखेड़ा होता ही नहीं न ! इस बखेड़े का स्वरूप ही वह है ।

उसे लोग क्या कहते है ? “टकरावकी वजहसे ही हमारा प्रेम होता है ।” तब बात भी सही है । वह आसक्ति टकरावकी वजहसे ही हुई है । जहाँ टकराव कम वहाँ आसक्ति नहीं होती है । जिस घरमें स्त्री-पुरुषके बीच टकराव कम होगा वहाँ आसक्ति कम है ऐसा समझ लेना । बात समझमें आती है ?

प्रश्नकर्ता : संसार व्यवहार में कभी-कभी जो अहम् रहता है उसकी वजहसे बहुत झरती है ।

दादाश्री : वेह अहम्की चक्रमक्र नहीं झरती । दिखने में वह अहम्की चक्रमक्र लगती है मगर विषयके अधीने होने से वह होती है । विषय नहीं होने पर वह नहीं होती । विषय समाप्त होने पर वह ईतिहास ही समाप्त हो जायेगा । इसलिए अगर साल भरके लिए यदि ब्रह्मचर्य व्रत धारण करे, तो

उनसे मैं पूछता हूँ तब कहते हैं, “चक्रमक्र जराभी नहीं कच-कच नहीं, खटखट नहीं, कुछ भी नहीं स्टेन्ड स्टील (सबशांत) !”

प्रश्नकर्ता : पहले तो हम ऐसा मानते थे कि घरके कामकाजकी वजहसे टकराव होता होगा । पर घरके काममें हेल्प (मदद) करने (23) जायें, फिर भी टकराव ।

दादाश्री : वे सभी टकराव होंगे ही । जहाँ तक यह विकारी मामला है, सम्बन्ध है, वहाँ तक टकराव होगा ही । टकरावका मूल ही है यह । जिसने विषय जीत लिया उसे कोई नहीं हरा सकता । कोई उसका नाम भी नहीं लेगा । उसका प्रभाव होगा ।

टकराव स्थूलसे सूक्ष्मत्तम तकका !

प्रश्नकर्ता : हमारा विधान है कि टकराव टालिए । इस वाक्यका आराधन करता जाये तो आखिर मोक्ष तक पहुँचाये । उसमें स्थूल टकराव टालना, फिर आहिस्ता-आहिस्ता इस प्रकार बढ़ते बढ़ते सूक्ष्म टकराव, सूक्ष्मतर टकराव टालता है । यह कैसे ? वह समझायें ।

दादाश्री : वह जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाये वैसे अपने आप उसे सूझ पैदा होती जाये, किसीको सिखाना नहीं पड़ता । अपने आप आता जाये । वह शब्द ही ऐसा है कि आखिरकार मोक्ष तक ले जाये ।

दूसरा “भूगते उसकी भूल” यह भी मो० तक पहुँचाये । ये एक एक शब्द मो० तक पहुँचाये ऐसा है । इसकी गारन्टी हमारी ।

प्रश्नकर्ता : वह साँपका, खँभेका उदाहरण दिया वह तो स्थूल टकराव का उदाहरण है फिर सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम के उदाहरण दीजिए, सूक्ष्म टकराव कैसा होगा ?

दादाश्री : तुझे फाधर (पिताजी) के साथ होता है वह सब सूक्ष्म टकराव ।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म माने मानसिक ? बानीसे होता है वह भी सूक्ष्ममें जायेगा ?

दादाश्री : वग स्थूलमें जो सामनेवालेको मालूम नहीं हो, देखनेमें नहीं आते वे सभी सूक्ष्ममें जाते हैं ।

प्रश्नकर्ता : वह सूक्ष्म टकराव टालें किस तरह ?

दादाश्री : पहले स्थूल, फिर सूक्ष्म, बादमें सूक्ष्मतर और (24) अंतमें सूक्ष्मतम टकराव टालना है ।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्मतर टकराव किसे कहते हैं ?

दादाश्री : तू किसीको मारता हो और वह भाई ज्ञानसे देखेकि “मैं शुद्धात्मा हूँ यह व्यवस्थित मार रहा है ।” इस प्रकार देखे पर मनसे जरा-सा भी दोष देखे, वह सूक्ष्मतर टकराव ।

प्रश्नकर्ता : फिरसे कहें, ठीक से समझमें नहीं आया ।

दादाश्री : यह तू सभी लोगोके दोष देखता है न, वह सूक्ष्मतर टकराव है ।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् दूसरोंके दोष देखना यह सूक्ष्मतर टकराव ?

दादाश्री : ऐसा नहीं खुदने तय किया हो कि दूसरोंका दोष है ही नहीं और फिर भी दोष दिखें वे सूक्ष्मतर टकराव है । क्योंकि वे शुद्धात्मा है और दोष उनसे अलग हैं ।

प्रश्नकर्ता : तो उसे ही मानसिक टकराव कहे न ?

दादाश्री : वह मानसिक तो सब सूक्ष्ममें गया ।

प्रश्नकर्ता : तो इन दोनोंमें फर्क कहाँ पड़ता है ?

दादाश्री : यह मनके उपरकी बात है यह तो ।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह सूक्ष्मतर टकराव है, उस समय सूक्ष्म टकराव भी साथ होगा न ?

दादाश्री : यह हमें देखनेकी जरूरत नहीं है ! सूक्ष्म अलग होता है, सूक्ष्मतर अलग होता है । सूक्ष्मतर तो आखिर बात है ।

(25) **प्रश्नकर्ता :** एक बार सत्संगमें ही ऐसी बात हुई थी कि चन्दुलालके साथ तन्मयाकार होना वह सूक्ष्मतर टकराव कहलाये ।

दादाश्री : हाँ, सूक्ष्मतर टकराव ! उसे टालना । भूलसे तन्मयाकार हुआ न, फिर बादमें मालूम होता है कि, यह भूल हो गई ।

प्रश्नकर्ता : तब वह टकराव टालनेका उपाय केवल एक प्रतिक्रमण ही है कि और कुछ है ?

दादाश्री : दूसरा कोई हथियार है ही नहीं । ये हमारी नौ दफ़ाएँ वे भी प्रतिक्रमण ही हैं । दूसरा कोई हथियार नहीं है । इस दुनियामें प्रतिक्रमण के सिवा और कोई साधन नहीं है । ऊँच से ऊँचा साधन । क्योंकि संसार अतिक्रमणसे खड़ा हुआ है ।

प्रश्नकर्ता : वह तो कितना भारी विस्मयकारण है । प्रत्येक वाक्य “जो हुआ सो ही करेक्ट (सही)” “भुगते उसकी भूल” ये सब एक एक जो वाक्य हैं, वे सभी अद्भुत वाक्य हैं और दादाकी साक्षीमें जो प्रतिक्रमण करते हैं न, तो उनके स्पंदन पहुँचते ही हैं ।

दादाश्री : हाँ, सही है . स्पंदन तुरन्त ही पहुँच जाते हैं अऔ उनका परिणाम आता है । हमें विश्वास होता है कि असर हुआ लगता है ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, प्रतिक्रमण तो इतनी त्वरा से हो जाने हैं, उसी क्षण! यह तो अजूबा है, दादा !! यह दादा कृपा अजूबा है!!!

दादाश्री : हाँ, वह अजूबा है । वस्तु सायन्टिफिक (वैज्ञानिक) है ।

- जय सच्चिदानंद

प्राप्तिस्थान

अहमदाबाद : श्री दीपकभाई देसाई, दादा दर्शन, 5, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४.

फोन : 7540408,7543979, **E-mail :** dadaniru@vsnl.com

मुंबई : डॉ. नीरुबहन अमीन, बी-904, नवीनआशा एपार्टमेन्ट, दादासाहेब फालके रोड, दादर (से.रे.), मुंबई-४०००१४

फोन : 4137616, **मोबाईल :** 9820-153953

वडोदरा : श्री धीरजभाई पटेल, सी-१७, पल्लवपार्क सोसायटी, वी.आई.पी.रोड, कारेलीबाग, वडोदरा. **फोन:** ०२६५-४४१६२७

सुरत : श्री विठ्ठलभाई पटेल, विदेहधाम, ३५, शांतिवन सोसायटी, लंबे हनुमान रोड, सुरत. **फोन :** ०२६१-८५४४९६४

राजकोट : श्री रूपेश महेता, ए-3, नंदनवन एपार्टमेन्ट, गुजरात समाचार प्रेस के सामने, K.S.V.गृह रोड, राजकोट. **फोन:** ०२८१-२३४५९७

दिल्ली : श्री जसवंतभाई शाह, ए-24, गुजरात एपार्टमेन्ट, पीतमपुरा, परवाना रोड, दिल्ली. **फोन :** 011-7023890

चेन्नाई : अजितभाई सी. पटेल, 9, मनोहर एवन्यु, एगमोर, चेन्नाई-८
फोन : 044-8261243/1369, **Email :** torino@md3.vsnl.net.in

U.S.A. : Dada Bhagwan Vignan Institute : Dr. Bachu Amin,
902 SW Mifflin Rd, Topeka, Kansas 66606.

Tel : (785) 271-0869, **Fax :** (785) 271-8641

E-mail : shuddha@kscable.com, bamin@kscable.com

Dr. Shirish Patel, 2659, Raven Circle, Corona, CA 92882
Tel. : 909- 734-4715, **E-mail :** shirishpatel@mediaone.net

U.K. : Mr. Maganbhai Patel, 2, Winifred Terrace, Enfield, Great
Cambridge Road, London, Middlesex, EN1 1HH, U.K.
Tel : 020-8245-1751

Mr. Ramesh Patel, 636, Kenton Road, Kenton Harrow.
Tel.: 020-8204-0746, **E-mail:** dadabhagwan_uk@yahoo.com

Canada : Mr. Bipin Purohit, 151, Trillium Road, Dollard DES
Ormeaux, Quebec H9B 1T3, CANADA.

Tel. : 514-421-0522, **E-mail :** bipin@cae.ca

Africa : Mr. Manu Savla, PISU & Co., Box No. 18219, Nairobi,
Kenya. **Tel :** (R) 254-2- 744943 (O) 254-2-554836

Fax : 254-2-545237, **E-mail :** pisu@formnet.com

Internet website : www.dadabhagwan.org, www.dadashri.org